कथा सरिता

एक दोहे ने बदली दुनिया

एक राजा को राज भोगते काफी समय हो गया था। बाल भी सफ़ेद होने लगे थे। एक दिन उसने अपने दरबार में उत्सव रखा और अपने गुरूदेव एवं मित्र देश के राजाओं को भी सादर आमंत्रित किया। उत्सव को रोचक बनाने के लिए राज्य की सुप्रसिद्ध नर्तकी को भी बुलाया गया ।

राजा ने कुछ स्वर्ण मुद्रायें अपने गुरू जी को भी दीं, ताकि नर्तकी के अच्छे गीत व नृत्य पर वे उसे पुरस्कृत कर सकें। सारी रात नृत्य चलता रहा। ब्रह्म मुहूर्त की बेला आयी। नर्तकी ने देखा कि मेरा तबले वाला ऊंघ रहा है, उसको जगाने के लिए नर्तकी ने एक दोहा पढ़ा -

बहु बीती, थोड़ी रही, पल पल गयी बिताई। एक पलक के कारने, ना कलंक लग जाए।।

अब इस दोहे का अलग-अलग व्यक्तियों ने अपने अनुरूप अर्थ निकाला। तबले वाला सतर्क होकर बजाने लगा।

जब यह बात गुरू जी ने सुनी तो उन्होंने सारी मुद्रायें उस नर्तकी के सामने फेंक दीं ।

वही दोहा नर्तकी ने फिर पढ़ा तो राजा की लड़की ने अपना नवलखा हार नर्तकी को भेंट कर दिया।

उसने फिर वही दोहा दोहराया तो राजा के पुत्र युवराज ने अपना मुकुट उतारकर नर्तकी को समर्पित कर दिया ।

नर्तकी फिर वही दोहा दोहराने लगी तो राजा ने कहा - 'बस कर, एक दोहे से तुमने वैश्या होकर सबको लूट लिया है।'

राजा की यह बात सुनकर गुरु के नेत्रों में आँसू आ गए और गुरू जी कहने लगे - 'राजन! इसको तू वैश्या मत कह, ये अब मेरी गुरू बन गयी है। इसने मेरी आँखें खोल दी हैं। यह कह रही है कि मैं सारी उम्र जंगलों में भक्ति करता रहा और आखिरी समय में नर्तकी का मुजरा देखकर अपनी साधना नष्ट करने यहाँ चला आया हूँ। भाई! मैं तो चला।' यह कहकर गुरू जी तो अपना कमण्डल उठाकर जंगल की ओर चल पड़े।

राजा की लड़की ने कहा - 'पिता जी! मैं जवान हो गयी हूँ। आप आँखें बन्द किए बैठे हैं, मेरी शादी नहीं कर रहे थे और आज रात मैंने आपके महावत के साथ भागकर अपना जीवन बर्बाद कर लेना था। लेकिन इस नर्तकी ने मुझे सुमति दी है कि जल्दबाज़ी मत कर, कभी तो तेरी शादी होगी ही। क्यों अपने पिता को कलंकित करने पर तुली है?'

युवराज ने कहा - 'पिता जी! आप वृद्ध हो चले हैं, फिर भी मुझे राज-पाठ नहीं दे रहे थे। मैंने आज रात ही आपके सिपाहियों से मिलकर आपका कत्ल करवा देना था। लेकिन इस नर्तकी ने समझाया कि पगले! आज नहीं तो कल आखिर राज तो तुम्हें ही मिलना है, क्यों अपने पिता के खून का कलंक अपने सिर पर लेता है। धैर्य रख।'

जब ये सब बातें राजा ने सुनी तो राजा को भी आत्म ज्ञान हो गया। राजा के मन में वैराग्य आ गया। राजा ने तुरंत फैसला लिया - 'क्यों न मैं अभी युवराज का राजतिलक कर दूँ!' फिर क्या था, उसी समय राजा ने युवराज का राजतिलक किया और अपनी पुत्री को कहा - 'पुत्री! दरबार में एक से एक राजकुमार आये हुए हैं। तुम अपनी इच्छा से किसी भी राजकुमार के गले में वरमाला डालकर पति रूप में चुन सकती हो।' राजकुमारी ने ऐसा ही किया और राजा सब त्यागकर जंगल में गुरू की शरण में चला गया।

यह सब देखकर नर्तकी ने सोचा - 'मेरे एक दोहे से इतने लोग सुधर गए, लेकिन मैं क्यूँ नहीं सुधर पायी? उसी समय नर्तकी में भी वैराग्य आ गया। उसने उसी समय निर्णय लिया कि आज से मैं अपना बुरा धंधा बन्द करती हूँ और कहा कि हे प्रभु! मेरे पापों से मुझे क्षमा करना। बस, आज से मैं सिर्फ तेरा नाम सुमिरन करूंगी।'

समझ आने की बात है, दुनिया बदलते देर नहीं लगती। एक दोहे की दो लाईनों से भी हृदय परिवर्तन हो सकता है। केवल थोड़ा धैर्य रखकर चिन्तन करने की आवश्यकता है ।

प्रशंसा से पिघलना मत, आलोचना से उबलना मत, नि:स्वार्थ भाव से कर्म करते रहो, क्योंकि इस धरा का, इस धरा पर, सब धरा रह जायेगा।

जलालाबाद-पंजाब। नगर परिषद की प्रधान ममता वलेचा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सरमिष्टा।

किशनगढ़-रेनवाल(राज.)। जयपुर नगरपालिका अध्यक्षा सुमन कुमावत को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.सुमित्रा। साथ हैं ब्र.कु.आरती।

रामपुर-बरेली। सर्व धर्म संवाद मंच के सचिव सैयद अब्दुल्ला तारिक को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. संगीता।

दिल्ली-दिलशाद गार्डन। विधान सभा अध्यक्ष/स्पीकर राम निवास गोयल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गीता।

बोंगईगांव-असम। आई.ए.एस. डी.सी. बिश्वाजीत पेगु को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. लोनी।

ब्रह्मपुर-निलाचल नगर। कल्याणी मलि,उप-आयुक्त आयकर विभाग को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.मंजू।

तपा-पंजाब। एस.डी.एम. बी.एस. शेरगिल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ऊषा। साथ हैं ब्र.कु. डॉ. लेखराज,माउण्ट आबू।

डालटनगंज-झारखण्ड। विधानसभा के पहले स्पीकर इंदर सिंह नामधारी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रजनी।

गुमला-झारखण्ड। लातेहार के एस.पी. धनंजय कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलम।

गोंडा-उ.प्र.। मंडलायुक्त एस.वी.एस. रंगाराव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. दिव्या।

चाँदपुर-उ.प्र.। एस.बी.आई. के मैनेजर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ ब्र.कु. साधना, ब्र.कु. पूजा तथा बैंक स्टाफ।

पलवल-हरियाणा। दक्षिण हरियाणा बिजली निगम के एस.डी.ओ. प्रशांत कुमार को ज्ञान चर्चा के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुदेश।

आस्का-ओडिशा। रक्षाबंधन के अवसर पर सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में रक्षाबंधन का आध्यात्मिक महत्व बताते हुए ब्र.कु. प्रवाती। साथ हैं मुख्य अतिथि टी.वी. भास्कर राव तथा अन्य गणमान्य मेहमान।

दिल्ली-दिलशाद कॉलोनी। पुलिस स्टेशन में रक्षाबंधन कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ए.सी.पी. हरेश्वर स्वामी, एस.एच.ओ. संजीव कुमार, एस.एच.ओ. मनजीत तोमर, एस.एच.ओ. सी.पी. सिंह, ब्र.कु. तनुजा, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. नीता, धर्मेन्द्र भाई तथा अन्य।